Research Paper Literature

साहित्य में नारी–विद्रोह की अभिव्यक्ति
Sahitya Me Naari-Veedroh Ki Abhivyakti

* Dr. Madhulika

* Asst Professor Hindi Departmant C.R.M, Jaat. P. G. College, Hisar

Keywords :

इतिहास के प्रत्येक युग में यथाषक्ति से ऊबकर मानव ने विद्रोह किया है। यह वास्तविकता स्वीकारी भी गई है कि मानव–स्वभाव में विद्रोह की भावना निसर्गतः विद्यमान रहती है जो आस्थाओं आकाक्षाओं की पूर्ति न होने पर ज्वालामुखी के समान फूट पडती है। जिसके कारण पुरुश प्रधान समाज में अन्याय, असमानता और षोशण के विरूद्ध महिलाओं का विद्रोह तीव्र हुआ।

जिस आयाम के आधार पर लिंग विभाजन के बुनियादी प्रष्न को उठाते हुए राजकिषोर 'स्त्री–पुरुश' कुछ पुनर्विचार में लिखते हैं : ''स्त्री–पुरुश के कृत्रिम विभाजन करके मनुश्य को किस हद तक आक्रांत किया है। इसका एक दिलचस्प उदाहरण है ईष्वर के बारे में मनुश्य की कल्पना का स्वरूप अधिकांष धर्मों में ईष्वर की कल्पना पुरुश के रूप में की गयी है।'' स्त्रीवादी आपत्ति करते है कि ईष्वर को पुरुश ही क्यों माना जाए ? उनकी प्रति क्रियावादी टिप्पणी है कि लेखकों को लिंग के आधार पर आंकना ठीक नहीं यह सैद्धान्तिक और बुनियादी तौर पर भेद नहीं मानते परन्तु नारी–लेखन पुरुश–लेखन से सर्वथा भिन्न है तथा उनकी अपनी–अपनी पहचान बनी और स्थिति से आगे बढ़कर साहित्य से भी प्रेरित हुई। साहित्य के माध्यम से ही पुरुश तथा महिला साहित्यकारों ने मिलकर असंतोश, अस्वीकृति और विद्रोह का स्वर बहुत साफतौर पर उभारा कहीं तीखे व्यंग्य के रूप में और कहीं प्रतिरोध के रूप में लेखिकाओं की बहुआयामी मानसिकता में अब उनका विद्रोहणी रूप उभरकर सामने आ रहा है जो पुरुश के अहं को चुनौती देता है।

'स्त्री पुरुश' कुछ पुनर्विचार की आत्मकथा में राजकिषोर लिखते हैं ''दुनिया भर में पुरुश के लिए स्थल लौकिक चिंताओं के अलावा स्त्री और ईष्वर, यही कुतूहल कल्पना तथा सोच–विचार के दो प्रमुख केन्द्र रहे हैं। वे कहते हैं ईष्वर ने मुझे कभी आकर्शित नहीं किया, स्त्री अब भी लुभाती है लेकिन बहुत दूसरे लोगों की तरह स्त्री मेरे लिए जितना यथार्थ है, उससे कहीं ज्यादा कल्पना'' पांच हजार वर्श पहले भी स्त्री–पुरुश के लिए जादुई षब्द था, और आज भी नारी–पुरुश लेखन केन्द्र में पायी जाती है।

नवजागरण के प्रारम्भ से ही, साहित्य में लेखकों ने स्त्रियों की अषिक्षा, उनकी दीनदषा पर चिंता व्यक्त की है।

भारतेन्दु ने 'भारत–दुर्दषा' नाटक में बाल–विवाह, विधवा–विवाह, निशेध कुरीतियों की चर्चा की। इसके साथ ही 'भारतवर्श की उन्नति कैसे हो सकती है' षीर्शक लेख में बाल. विवाह, सती प्रथा तथा बहु विवाह दूर करने तथा विधवा विवाह करने की सम्मति दी। भारतेन्दु युग के बाद जब स्त्रियों ने लिखना षुरु किया तब उनकी संख्या नगण्य थी और आत्मविष्वास की बेहद कमी थी। इस प्रारंभिक संदर्भ में यह बताना जरूरी है कि उस काल के पुरुश–लेखन में नारी–विद्रोह के प्रति क्या दृश्टिकोण रहा है ?

बलकृश्ण भट्ट तथा प्रतापनायण मिश्र का सामाजिक सुधारों के प्रति विषेश आग्रह परिलक्षित होता है। भट्ट जी का प्रिय विशय बाल–विवाह विरोध है। इसके अतिरिक्त दूसरा प्रिय विशय स्त्रियों की उन्नति है। वे स्त्री षिक्षा के समर्थक हैं। इन तथ्यों से लगता है कि इनके बाद आने वाले पुरुशवादी आचार्यों को 'द्रौपती' जैसी प्रबल व्यक्तित्व वाली नारी पसंद नहीं। वे अनुसूया, सीता, सावित्री के ऊपर निर्मित खाके में तमाम नारी चरित्रों को फिट करना चाहते हैं जो सदा पति और परिवार की इच्छाओं की पूर्ति करने वाली हो।

''आचार्यों की कौरव–सभा'' नामक लेख भवदेव जी लिखते हैं कि मनु महावाक्य 'न स्त्री स्वातंत्र्यम् अहर्ति' हिन्दी आचार्यों को प्रिय था। इसीलिए आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपना प्रथम नारी आलेख प्रस्तुत किया 'जापान की स्त्रियां' उन्होंने लिखा ''जापान की स्त्रियां षिक्षित है पर वहां की स्त्रियां स्वतन्त्र नहीं है। वे अपने पति के कुटुंबियों का बड़ा आदर करती हैं। पति को तो वे स्वामी क्या, देवता समझती है, हमारे देष के समान जापान में भी स्त्रियों को हर अवस्था में दुसरों के अधीन रहने की षास्त्राज्ञा है। लड़कपन में माता–पिता, विवाह हो जाने पर पति और विधवा हो जाने पर पुत्र की आज्ञा में रहती हैं वे हृदय से अपने पति की सेवा करती है।

'स्त्री–षिक्षा की आलोचना' में दर्षाया गया है कि ''यदि इस विद्यालय की पढी हुई लड़कियां सुगृहिणी हों, तो फिर इससे बढ़कर क्या षिक्षा हो सकती है'' आचार्य रामचन्द्र षुक्ल ने प्रथम हिन्दी कहानी लेखिका, बंग महिला के लेख 'नारी षिक्षा' का विरोध किया ''स्त्री–षिक्षा का मुख्य उद्देष्य है – नरम, सहिश्णु और षांत बनाना गृह कार्यों में दक्ष करना, जो षिक्षा निर्लज्ज बनाती है, उसके हम विरोधी हैं।''

इलाहाबाद में 'स्त्री–दर्पण' के माध्यम से नारी–समस्याओं का हल करने का केन्द्र बना। वहां श्रीमती रामेष्वरी देवी नेहरू लड़ने लगी। उन्होंने प0 मदनमोहन मालवीय का विरोध किया ''हमारे कुछ नेता मालवीय जी स्त्रियों के वोट के विरूद्ध अब तक कोषिष कर रहे हैं। हमको तन–मन–धन से अपने अधिकार प्राप्ति के लिए चेश्टा करना उचित है।

पं0 हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की दृश्टि में भी षाष्वत् नारी का ही महत्व था। उन्होंने लिखा ''परिवार के बिखरने और नश्ट होने के कारणों की जांच की जाय, तो प्रायः मिलेगा कि परिवार में किसी स्त्री का उथला और संकीर्णतायुक्त आचरण ही उसका मुख्य कारण होता है।''

मैथिलीषरण गुप्त ने स्त्री के समान अधिकारों तथा षिक्षा के प्रसार के लिए चलने वाले आंदोलनों का समर्थन किया तथा बालविवाह पर दुःख प्रकट किया। मैथिलीषरण गुप्त की स्त्रियों से संबंधित कविताएं प्रसिद्ध है :

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।

आंचल में है दूध आंखों में पानी।

नारी के अनन्त रूपों, उसके अद्भुत प्रभाव और उसकी अपार षक्ति को देखते हुए, प्रसाद को साहित्य में यही स्वीकार करना पड़ता है।

'हे अनन्त। रमणीय कौन तुम, यह मैं कैसे कह सकता।'

मुन्षी प्रेमचन्द ने 'रंगभूमि' में विवाह के संबंध में उदार दृश्टिकोण अपनाया और 'निर्मला' में समाज की कुछ कुरीतियों का भयंकर परिणाम दिखाया गया है। 'नरक का मार्ग' में अनमेल विवाह 'उद्धार' में वैवाहिक प्रथा के दोशों का व 'कुसुम' कहानी में विषेश रूप से स्त्री की स्थिति व समस्याओं का वर्णन किया है।

लक्ष्मी नारायण मिश्र ने 'सिंदूर की होली' नाटक में विधवा – विवाह की समस्या उपस्थित की है। जैनेन्द्र के 'त्यागपत्र' में भी स्त्रियों की समस्या प्रधान है। निराला की 'तोड़ती पत्थर' और 'विधवा' षीर्शक कविताओं में यही भावना सक्रिय है। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला में 'परिमल' में विधवा की दषा का करूण चित्रण किया –

''वह इश्टदेव के मन्दिर सी पूजासी।

वह दीप–षिक्षा सी षान्त, भाव में लीन।।''

अत्यन्त प्रसिद्ध रहा सुमित्रानन्दन पंत द्वारा घोशित ''मुक्त करो नारी को मानव, चिर वन्दिनी नारी को, युग–युग की बर्बर कारा से, जननि, सखी प्यारी को।''

इस प्रकार पंत जी ने नारी–मुक्ति का आह्वान किया।

राश्ट्रीय मुक्ति चेतना के उभरने से साहित्य में पहली बार भाव बोध और जीवन दृश्टि में परिवर्तन आया। साहित्यिक दृश्टिकोण भी अपनाया जाने लगा। स्पनात्मकता के क्षेत्र में नारी जीवन के दुःख, अवसाद अवहेलना और उत्पीड़न चित्रित करने का प्रयास किया जाने लगा।

अमृतराय के उपन्यास 'बीज' के नायक सत्यवान के कथन से इस बात की पुश्टि होती है कि आदर्ष स्थिति वही है जब ''स्त्री को घर के तहखाने में बंद न किया जाये, उसकी प्रतिभाओं को मुक्त किया जाय, अर्थोपार्जन के लिए भी ताकि उसका स्वतन्त्र अस्तित्व हो और वह जाने कि वह भी किसी की आश्रिता नहीं है।''

इसी प्रकार 'इन्द्र सुने' में गिरिराज किषोर उन अंधविष्वासों का विरोध करते हैं जो नारी को पुरुश के समकक्ष माने जाने से रोकते हैं – ''हम अंधविष्वासों में पड़ गए। ये अंधविष्वासों के कीड़े उन्हीं लोगों द्वारा हमारे रक्त में प्रविश्ट किये गये हैं, जिनका स्वार्थ देवलोक को बनाये रखने में निहित है। इससे बचो किसी भी विद्रोह या क्रांति को नश्ट

करने वाले पहले विप्लवकारियों को बांटते हैं, फिर अंधविष्वासों, धर्म, रूढियों के माध्यम से उनकी बुद्धि को भ्रश्ट कर देते हैं, सुविधाओं को हमारे जीवन में प्रमुख बना देते है।

अज्ञेय जी नारी को स्वतन्त्र सामाजिक व्यक्तित्व देने के पक्ष में थे। नागार्जुन मिश्र अमृतलानागर, मोहन राकेष, भगवती चरण वर्मा राजेन्द्र यादव जैसे प्रतिश्ठित लेखकों ने अपनी कहानियों में नारी षोशण का विरोध किया है। इनकी अधिकांष रचनाएं नारी चेतना से सम्पन्न है। कुछ ऐसी पत्रिकाएं है जैसे राजेन्द्र यादव द्वारा सम्पादित 'हंस' जो एकदम आधुनिक सामाजिक चिंतन की आवाज देकर महिला समस्याओं के बारे में लेखकों का दृश्टिकोण हमारे सामने रखती है। यादव जी अरविन्द जैन के नारी–विरोध पर केन्द्रित षोध 'औरत होने की सजा' की भूमिका में लिखते हैं कि इसमें यह जानकारी मिलती है कि ''हमारा कानून किस तरह पुरूश वर्चस्व का षिकार है और हर अपराध का फैसला प्रायः स्त्री के खिलाफ यानी पुरूशों के पक्ष में जाता है।''

नारी विद्रोह के चलते लेखकों तथा लेखिकाओं ने सैक्स–जीवन की विकतम समस्याओं को देखा परखा और संबंधों को महत्व दिया। विभिन्न संदर्भों को चित्रित करने के लिए महिलाओं की छटपटाहट देखकर डॉ0 लक्ष्मीसागर वार्श्णेय कहते हैं – ''कभी–कभी तो ऐसा लगता है कि हिन्दी की उपन्यास लेखिकाओं ने 'वार ऑफ सेक्सेस' छेड़ दिया।'' यही बात लेखकों के बारे में भी कही जा सकती है। परिवर्तित विद्रोहषील नारी को देखने के दृश्टिकोण में लेखिकाओं और लेखकों में समानता पायी जाती है। जिस प्रकार रामेष्वर षुक्ल कृत 'अंचल' के उपन्यास की नायिका कहती है –

''मैं उन औरतों में नहीं हूं जो व्यक्तित्व का बलिदान करती घूमती है जिनकी कोई मर्यादा व षील नहीं होता और पर–पुरूश की हवा लगने से ही खराब हो जाती है। मैं पति की गुलामी को ही सच्चरित्रता नहीं मानती, मुझमें आत्मनिर्भरता की कमी नहीं।

साहित्य में पुरूश लेखकों ने भी स्त्रीपक्षीय मूल्यों का विकास किया है पर नारी–विरोध ी उनका साहित्य समरूप नहीं, किन्तु कुछ लेखक आसक्त और कुछ सहानुभूतिषील भी हुए हैं। पुरूश लेखन नारी के पक्ष में लेखन, पुरूश का आदर्षवाद है, जबकि अपने पक्ष में स्त्री का लेखन उसका यथार्थवाद है। इस प्रकार आदर्षवादी पुरूशों और स्वांतत्र्योतर महिला लेखिकाओं के नारी चित्रण में बहुत बड़ा अन्तर है। जो साहित्य में नारी–विद्रोह को लेकर महिला–लेखन में एक अहम दृश्टिकोण रहा है।

REFERENCES

1-jktfd'kkj L=h&i:"k dN iufopkj] vkRedF; i0 l0 121 | 2- ogh i0 122 | 3- ckyd"k.k HkVV] fuc/kko yh ijEijk] i0 3 | 4- ogh i0 30&31 | 5- ogh i0 131 | 6- ogh i0 161 | 7- ogh i0 164 |8- ckyd".k HkVV] fuCkU/kekyk] Hkkx&2] i0 136 | 9- ogh & i0 109] 110 | 10- gl&tu 1997] i0 42 | 11- ljLorh] lu 1905] i0 21 | 12- ljLorh 1907] i0 21 | ljLorh lu 1908] i0 498 |L=h&ni.k] fnlEcj 1918] i0 207 | /kkfed vkj lPpfj= ukjh dVEc dh 'kkHkk | xUFkkoyh&9 i0 384 | 13- ckyd".k HkVV] Hkkjrh] Hkfo";r [k.M] i0 174&175 | 14- ogh i | icU/k] min'kd] i0 125 | 15- iepUn] ekuljkoj] Hkkx 3&4 | 16- Mk0 ';ke cgknj oek] fujkyk] ogr fo'o lfDr dk'k [k.M&3] 1985 i0 997 | 17- verjk;] cht] i0 259 | 18- fxfjjkt fd'kkj] bn lu] i0 109 |19- uhgkjxkr] Lokr=;kUkj fgUnh efgyk dFkkdkjk d miU;klk e ;FkkFk d fofHkUu :Ik] i0 13] 17 |